Original Article
ISSN(Online): 2584-0983
https://shikshasamvad.com/

Shiksha Samvad
International Open Access, Peer Reviewed & Refereed Journal
© Shiksha Samvad|Volume-04| Issue-01| September- 2026
DOI: - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.26

शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्स्थापन: वर्तमान संदर्भ और संभावनाएँ

डॉ. अरविन्द कुमार पाण्डेय

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग , जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पीजी कॉलेज, बाराबंकी,

Email: ap594522@gmail.com

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge Systems—IKS) भारत में विकसित ज्ञान, चिंतन, अनुभव, शास्त्रीय परंपराओं, कलाओं, भाषाओं, वैज्ञानिक एवं तकनीकी अभ्यासों तथा लोक-आदिवासी ज्ञान की बहुस्तरीय विरासत को समेटती है। औपनिवेशिक काल और आधुनिक शिक्षा की संस्थागत संरचनाओं के कारण पारंपरिक ज्ञान की अनेक धाराएँ मुख्यधारा के औपचारिक पाठ्यक्रम से दूर हुईं; वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पुनः जोड़ने की स्पष्ट दिशा दी है। प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्स्थापन की आवश्यकता, वर्तमान संस्थागत पहलों, शैक्षिक उपयोगिता, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं का आलोचनात्मक एवं रचनात्मक विश्लेषण करना है। अध्ययन वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक तथा दस्तावेज-आधारित है। इसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय के भारतीय ज्ञान परंपरा प्रभाग की योजनाओं, शोध-केंद्रों, पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्य-सामग्री कार्यक्रमों तथा उपलब्ध आधिकारिक सामग्री का उपयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पुनर्स्थापन का अर्थ अतीत की यांत्रिक पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि प्राथमिक स्रोतों, भाषायी दक्षता, प्रमाण-आधारित अध्ययन, अंतर्विषयक अनुसंधान और समकालीन समस्याओं के संदर्भ में भारतीय ज्ञान की पुनर्व्याख्या है। वर्तमान पहलों में IKS शोध केंद्र, शिक्षक-प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक-लेखन, इंटर्नशिप और ज्ञान-दस्तावेजीकरण उल्लेखनीय हैं। आलेख निष्कर्ष देता है कि प्रामाणिकता, आलोचनात्मक विवेक, भारतीय भाषाओं, शिक्षक-तैयारी और अनुसंधान-पद्धति को केंद्र में रखकर IKS का समावेशन भारतीय शिक्षा को अधिक संदर्भ-संवेदी, बहुविषयक, मूल्यपरक और नवोन्मेषी बना सकता है।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय ज्ञान प्रणाली, शिक्षा, पाठ्यचर्या, शिक्षक-शिक्षा, ज्ञान का पुनर्स्थापन

1. प्रस्तावना

भारत की ज्ञान-परंपरा एकरैखिक या एकमात्र ग्रंथ-परंपरा नहीं है। इसमें दर्शन, गणित, खगोल, व्याकरण, तर्क, आयुर्वेद, कृषि, स्थापत्य, कला, संगीत, नाट्य, योग, पर्यावरणीय अनुभव, शासन-विचार, भाषा-विज्ञान, हस्तकला और लोक तथा जनजातीय ज्ञान सहित अनेक धाराएँ विकसित हुईं। इन परंपराओं की विशिष्टता केवल उनकी प्राचीनता में नहीं, बल्कि ज्ञान को जीवन, नैतिकता, समाज, प्रकृति और व्यवहार से जोड़ने की उनकी क्षमता में है। अतः भारतीय ज्ञान परंपरा पर समकालीन शैक्षिक विमर्श का उद्देश्य केवल गौरव-वर्णन नहीं होना चाहिए; इसका उद्देश्य यह समझना होना चाहिए कि ऐतिहासिक ज्ञान का कौन-सा भाग प्रमाणित, शिक्षणीय, अनुसंधानयोग्य और वर्तमान संदर्भ में उपयोगी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं, स्थानीय ज्ञान, भारतीय कला-संस्कृति, पारंपरिक ज्ञान और भारतीय बौद्धिक विरासत को शिक्षा से जोड़ने पर बल देती है। नीति भारतीय ज्ञान प्रणालियों—विशेषकर जनजातीय ज्ञान तथा देशज और पारंपरिक सीखने के तरीकों—को गणित, खगोल,

दर्शन, योग, वास्तु, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषाविज्ञान, साहित्य, खेल, शासन और संरक्षण जैसे क्षेत्रों में समाहित करने की बात करती है। इसी व्यापक नीतिगत दिशा के बाद शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत Indian Knowledge Systems Division ने शोध, पाठ्यक्रम, केंद्र, शिक्षक-प्रशिक्षण, इंटर्नशिप और पाठ्य-सामग्री विकास जैसी पहलों को संस्थागत रूप दिया है।

यहाँ 'पुनर्स्थापन' शब्द का अर्थ किसी पूर्व व्यवस्था को अपरिवर्तित रूप में वापस लाना नहीं है। आधुनिक विश्वविद्यालय, वैज्ञानिक पद्धति, लोकतांत्रिक मूल्यों, संवैधानिक व्यवस्था और वैश्विक ज्ञान-संवाद के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्स्थापन पुनर्पाठ, पुनर्परीक्षण, दस्तावेजीकरण, अनुवाद, प्रयोग और समकालीन अनुप्रयोग की प्रक्रिया है। ऐसी प्रक्रिया तभी शैक्षिक रूप से विश्वसनीय होगी जब वह प्रमाण, स्रोत-समालोचना और आलोचनात्मक विवेक को स्वीकार करे।

2. अध्ययन की आवश्यकता

भारतीय ज्ञान परंपरा पर बढ़ती संस्थागत गतिविधियों के बीच दो अतियों से बचना आवश्यक है। पहली अति यह है कि परंपरागत ज्ञान को केवल अतीत का अवशेष मानकर आधुनिक शिक्षा से असंबद्ध कर दिया जाए; दूसरी यह कि प्रत्येक पारंपरिक दावे को बिना परीक्षण के वैज्ञानिक या सार्वभौमिक सत्य मान लिया जाए। शोधपरक शिक्षा को इन दोनों के बीच ऐसा मार्ग विकसित करना चाहिए जिसमें ऐतिहासिक स्रोतों का सम्मान और आधुनिक प्रमाण-पद्धति दोनों साथ रहें। यही कारण है कि IKS Division की वर्तमान पाठ्यपुस्तक योजना प्राथमिक पाठ पढ़ सकने वाले व्यक्ति की टीम में उपस्थिति को अनिवार्य करती है और अंतर्विषयक परियोजनाओं को प्रोत्साहित करती है। यह प्रामाणिक स्रोत-आधारित अध्ययन की दिशा में महत्वपूर्ण संकेत है।

शिक्षक-शिक्षा के लिए भी यह विषय अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक यदि भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल तथ्य-संग्रह के रूप में पढ़ाएगा तो वह विद्यार्थियों में जिज्ञासा और अनुसंधान दृष्टि विकसित नहीं कर पाएगा। इसके विपरीत यदि वह मूल स्रोत, ऐतिहासिक संदर्भ, तुलना, प्रयोग, स्थानीय अध्ययन और परियोजना-कार्य के माध्यम से इसे पढ़ाता है, तो IKS आलोचनात्मक चिंतन, सांस्कृतिक साक्षरता और अनुभवात्मक अधिगम का माध्यम बन सकता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

- भारतीय ज्ञान परंपरा की शैक्षिक अवधारणा एवं पुनर्स्थापन के अर्थ को स्पष्ट करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित प्रमुख प्रावधानों का विश्लेषण करना।
- वर्तमान संस्थागत पहलों—IKS केंद्रों, पाठ्यक्रमों, शिक्षक-प्रशिक्षण, पाठ्यपुस्तक और शोध योजनाओं—का अध्ययन करना।
- विद्यालयी, उच्च तथा शिक्षक-शिक्षा में IKS के संभावित शैक्षिक उपयोग की पहचान करना।
- IKS के प्रामाणिक और वैज्ञानिक समावेशन से जुड़ी चुनौतियों का विश्लेषण करना तथा भविष्य के लिए व्यावहारिक सुझाव देना।

4. शोध पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दस्तावेज-अध्ययन है। प्राथमिक नीतिगत स्रोत के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को आधार बनाया गया है। वर्तमान संस्थागत स्थिति के लिए शिक्षा मंत्रालय के Indian Knowledge Systems Division की आधिकारिक वेबसाइट, नीति एवं योजना दिशानिर्देश, IKS केंद्रों और उपलब्ध पाठ्यक्रमों की सूची तथा 2025-26 की पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्य-सामग्री योजना से संबंधित आधिकारिक सामग्री का उपयोग किया गया है। विश्लेषण में नीतिगत आशय, संस्थागत संरचना, ज्ञान की प्रामाणिकता, पाठ्यचर्या, शिक्षक-तैयारी और अनुसंधान की संभावनाओं को प्रमुख श्रेणियों के रूप में लिया गया है।

5. भारतीय ज्ञान परंपरा: अर्थ और स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल 'प्राचीन भारतीय ज्ञान' कहना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि यह परंपरा निरंतर परिवर्तन, व्याख्या और अनुप्रयोग से बनी है। इसमें शास्त्रीय ग्रंथों के साथ गुरु-शिष्य परंपराएँ, लोक अनुभव, समुदाय-आधारित कौशल, मौखिक परंपराएँ और क्षेत्रीय ज्ञान भी शामिल हैं। ज्ञान के संप्रेषण के माध्यम संस्कृत तक सीमित नहीं रहे; पाली, प्राकृत, तमिल तथा अनेक भारतीय भाषाओं ने विविध ज्ञान परंपराओं को संरक्षित और विकसित किया।

शैक्षिक दृष्टि से IKS को तीन स्तरों पर समझा जा सकता है—ज्ञान-सामग्री, ज्ञान-पद्धति और ज्ञान-दृष्टि। ज्ञान-सामग्री में विशिष्ट सिद्धांत, ग्रंथ, तकनीक और अभ्यास आते हैं; ज्ञान-पद्धति में अवलोकन, तर्क, संवाद, अभ्यास, अनुभव, स्मृति, भाष्य और वाद-विवाद जैसी प्रक्रियाएँ; जबकि ज्ञान-दृष्टि में मनुष्य, प्रकृति, समाज, मूल्य और ज्ञान के संबंध की व्यापक समझ आती है। शिक्षा में पुनर्स्थापन तभी सार्थक होगा जब इन तीनों स्तरों का संतुलित अध्ययन किया जाए।

6. ऐतिहासिक संदर्भ: परंपरा से आधुनिक संस्थान तक

भारत में ज्ञान का विकास गुरुकुल, पाठशाला, मठ, मंदिर, मदरसा, शास्त्रार्थ-परंपरा, कारीगर समुदाय और स्थानीय संस्थानों सहित विविध संरचनाओं में हुआ। ज्ञान का बड़ा भाग लिखित ग्रंथों में संरक्षित था, जबकि अनेक कौशल मौखिक और अभ्यास-आधारित थे। औपनिवेशिक काल में आधुनिक विश्वविद्यालय, परीक्षा-व्यवस्था और अंग्रेजी माध्यम के विस्तार ने नई संस्थागत संरचना बनाई। इस परिवर्तन ने आधुनिक विज्ञान और वैश्विक ज्ञान तक पहुँच के अवसर भी दिए, किंतु कई पारंपरिक ज्ञान-धाराएँ औपचारिक पाठ्यक्रम में सीमित हो गईं।

स्वतंत्र भारत में भारतीय भाषाओं, संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान पर कार्य जारी रहा, किंतु NEP 2020 ने इसे शिक्षा-सुधार के व्यापक ढाँचे से अधिक प्रत्यक्ष रूप से जोड़ा। इस नीति की विशेषता यह है कि भारतीय ज्ञान को केवल संस्कृति-विषय तक सीमित न रखकर विज्ञान, गणित, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कला, खेल, कृषि, शासन और व्यावसायिक शिक्षा सहित बहुविषयक क्षेत्रों से जोड़ने की संभावना प्रस्तुत की गई है।

7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और IKS

NEP 2020 शिक्षा को भारतीय जड़ों से संबद्ध करने के साथ वैश्विक गुणवत्ता और आधुनिक ज्ञान से जोड़ने की बात करती है। नीति का 'rootedness and pride in India' का विचार तभी शैक्षिक रूप से उत्पादक बनता है जब विद्यार्थियों को भारत के ज्ञान-इतिहास से परिचय के साथ उसकी आलोचनात्मक समझ भी दी जाए। नीति भारतीय भाषाओं को विशेष महत्त्व देती है, क्योंकि अनेक मूल स्रोत और परंपरागत अवधारणाएँ भाषायी संदर्भ से गहराई से जुड़ी हैं। विद्यालयी स्तर पर भारतीय ज्ञान के तत्व कला, खेल, कहानी, स्थानीय पर्यावरण, गणितीय परंपरा, स्वास्थ्य, योग, शिल्प और समुदाय-आधारित परियोजनाओं से जोड़े जा सकते हैं। उच्च शिक्षा में विषय-विशिष्ट IKS पाठ्यक्रम, वैकल्पिक पाठ्यक्रम, शोध परियोजनाएँ और अंतर्विषयक अध्ययन अधिक उपयुक्त हैं। यह विभेद आवश्यक है, क्योंकि आयु और विषयगत तैयारी के अनुसार सामग्री की गहराई, स्रोत और पद्धति अलग होनी चाहिए।

8. IKS Division का संस्थागत विकास

शिक्षा मंत्रालय का Indian Knowledge Systems Division अक्टूबर 2020 में स्थापित किया गया। इसके घोषित उद्देश्यों में IKS के विविध पहलुओं पर अंतर्विषयक और पारविषयक शोध को बढ़ावा देना, भारतीय ज्ञान की गहरी समझ को संरक्षित एवं प्रसारित करना तथा उसके सामाजिक अनुप्रयोगों को प्रोत्साहित करना शामिल है। प्रभाग IKS केंद्रों और शोध परियोजनाओं को समर्थन देता है तथा इंटर्नशिप, संकाय विकास कार्यक्रम, कार्यशालाएँ, दस्तावेजीकरण और आउटरीच गतिविधियाँ संचालित करता है।

वर्तमान आधिकारिक परियोजना खोज पोर्टल पर 124 परियोजनाएँ प्रदर्शित होती हैं। इनमें IIT(BHU) वाराणसी, IIT Madras, IIT Tirupati, IIT Mandi, Tezpur University और अन्य संस्थानों से जुड़े केंद्र/परियोजनाएँ दिखाई देती हैं। यह संख्या किसी एक प्रकार के 'केंद्र' की संख्या नहीं, बल्कि पोर्टल पर विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत प्रदर्शित परियोजनाओं का कुल परिणाम है; इसलिए इसे उसी अर्थ में पढ़ा जाना चाहिए। आधिकारिक सूची में आयुर्वेद, प्राकृतिक कृषि, मानसिक स्वास्थ्य, भारतीय मनोविज्ञान, प्राचीन भारतीय गणित-खगोल, पारंपरिक खेल, वास्तु और ज्ञान-संप्रेषण जैसे विविध क्षेत्र शामिल हैं।

9. वर्तमान पाठ्यक्रम और ज्ञान-क्षेत्र

IKS Division द्वारा क्यूरेट की गई पाठ्यक्रम सूची से वर्तमान कार्यान्वयन की बहुविषयक प्रकृति स्पष्ट होती है। उपलब्ध उदाहरणों में Ayurveda आधारित drug design, network pharmacology, Ayurveda food science and nutrition, Mathematical and Computer Logic for Nyaya Sastra Studies, Ancient Indian Mathematics, Indian Astronomy, Indian Ethics तथा Architecture and Town Planning में IKS जैसे पाठ्यक्रम शामिल हैं। ये पाठ्यक्रम विभिन्न संस्थानों द्वारा अपने आंतरिक अनुमोदन के अनुसार विकसित किए गए हैं; IKS Division स्वयं स्पष्ट करता है कि वह इन पाठ्यक्रमों को सुविधा हेतु संकलित करता है और संस्थागत अनुमोदन में उसकी भूमिका नहीं है। इसलिए पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता का मूल्यांकन संबंधित संस्था, स्रोत और अकादमिक मानकों के आधार पर किया जाना चाहिए।

यह तथ्य IKS के पुनर्स्थापन के लिए महत्वपूर्ण है: राष्ट्रीय स्तर पर एक ही स्थिर पाठ्यक्रम थोपने के बजाय विषय, संस्था और स्थानीय विशेषज्ञता के अनुसार विविध मॉडल विकसित हो सकते हैं। साथ ही गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट learning outcomes, प्राथमिक स्रोत, प्रमाणित संदर्भ, विशेषज्ञ समीक्षा और विद्यार्थी मूल्यांकन की आवश्यकता होगी।

10. पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्य-सामग्री विकास

2025-26 की Bhāratīya-Jñāna-Pāṭhyapustaka-Yojanā का उद्देश्य IKS शिक्षा के लिए उच्च गुणवत्ता की पाठ्यपुस्तकों और course materials के विकास को समर्थन देना है। योजना की एक उल्लेखनीय शर्त है कि लेखक-समूह में कम-से-कम एक ऐसा व्यक्ति हो जो संबंधित प्राथमिक पाठ को अनुवाद की सहायता के बिना पढ़ सके। योजना भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किसी भारतीय भाषा अथवा अंग्रेजी में सामग्री विकास की अनुमति देती है और संयुक्त, अंतर्विषयक परियोजनाओं को प्रोत्साहित करती है।

यह व्यवस्था तीन महत्त्वपूर्ण सिद्धांत सुझाती है—पहला, IKS का अध्ययन द्वितीयक लोकप्रिय साहित्य के बजाय मूल स्रोतों तक पहुँचे; दूसरा, भारतीय भाषाएँ ज्ञान-उत्पादन की सक्रिय भाषा बनें; और तीसरा, पारंपरिक विशेषज्ञता और आधुनिक अकादमिक विषयों के बीच सहयोग हो। यदि इन सिद्धांतों को शिक्षक-शिक्षा और विश्वविद्यालयी शोध में व्यवस्थित रूप से अपनाया जाए तो IKS अध्ययन की विश्वसनीयता बढ़ सकती है।

11. शिक्षा में IKS पुनर्स्थापन का प्रस्तावित ढाँचा

स्रोत-संग्रह	प्रामाणिकता परीक्षण	शैक्षिक रूपांतरण	समकालीन प्रयोग	मूल्यांकन व पुनरीक्षण
मूल ग्रंथ • मौखिक परंपरा • स्थानीय ज्ञान	भाषा • संदर्भ • तिथि • प्रमाण • विशेषज्ञ समीक्षा	आयु-उपयुक्त पाठ्यक्रम • गतिविधि • परियोजना	विज्ञान • पर्यावरण • स्वास्थ्य • कला • समाज	सीखने के परिणाम • शोध • प्रतिक्रिया
परंपरा की पहचान	**आलोचनात्मक सत्यापन**	**शिक्षण-अधिगम**	**नवाचार**	**जीवंत ज्ञान-परंपरा**

चित्र 1. भारतीय ज्ञान परंपरा के शैक्षिक पुनर्स्थापन का पाँच-चरणीय मॉडल (लेखक द्वारा विकसित)।

12. विद्यालयी शिक्षा में संभावनाएँ

विद्यालयी शिक्षा में IKS को अतिरिक्त तथ्यभार के रूप में जोड़ने के बजाय अनुभवात्मक और स्थानीय अधिगम से जोड़ना अधिक उपयोगी होगा। प्राथमिक स्तर पर लोककथाएँ, स्थानीय प्रकृति, ऋतु, जल, पौधों, खेलों, कला और शिल्प के माध्यम से जिज्ञासा विकसित की जा सकती है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी स्थानीय जल-संरचना, पारंपरिक कृषि, स्थापत्य, गणितीय विधियों, खगोल-परंपरा, भाषायी संरचनाओं या स्वास्थ्य-अभ्यासों पर स्रोत-आधारित लघु परियोजनाएँ कर सकते हैं।

ऐसी परियोजनाओं का उद्देश्य किसी परंपरा को स्वतः सत्य सिद्ध करना नहीं, बल्कि विद्यार्थी को प्रश्न पूछना सिखाना होना चाहिए—यह ज्ञान कहाँ से आया? इसका मूल स्रोत क्या है? किस समुदाय ने इसे विकसित किया? इसका ऐतिहासिक संदर्भ क्या था? क्या इसका वर्तमान वैज्ञानिक परीक्षण उपलब्ध है? कौन-से तत्व आज उपयोगी हैं और कौन-से केवल ऐतिहासिक अध्ययन के विषय हैं? इस प्रकार IKS inquiry-based learning का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

13. उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान में संभावनाएँ

उच्च शिक्षा IKS के गंभीर पुनर्स्थापन का प्रमुख क्षेत्र है, क्योंकि यहाँ भाषा-अध्ययन, स्रोत-समालोचना, प्रयोगशाला परीक्षण, क्षेत्रकार्य और अंतर्विषयक शोध संभव है। उदाहरणतः आयुर्वेद और औषधीय पौधों पर कार्य में इतिहास, संस्कृत/क्षेत्रीय भाषा, वनस्पति विज्ञान, रसायन और फार्माकोलॉजी का सहयोग आवश्यक हो सकता है; पारंपरिक जल-प्रबंधन के अध्ययन में इतिहास, भूगोल, इंजीनियरिंग, पर्यावरण विज्ञान और समुदाय-अध्ययन का संयोजन उपयोगी होगा।

वर्तमान IKS केंद्रों की विविधता इसी अंतर्विषयक दिशा का संकेत देती है। IIT Tirupati में प्राकृतिक कृषि और Vrikshayurveda से जुड़ा केंद्र, IIT Mandi में Indian Knowledge System and Mental Health Applications Centre, तथा IIT(BHU) में IKS केंद्र जैसे उदाहरण यह दिखाते हैं कि पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक शोध-संरचना के भीतर अध्ययन किया जा रहा है। इन पहलों का दीर्घकालिक मूल्य उनके शोध-प्रकाशनों, डेटासेट, सत्यापित परिणामों, पाठ्य-सामग्री और सामाजिक अनुप्रयोगों से आँका जाना चाहिए।

14. शिक्षक-शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा

शिक्षक-शिक्षा में IKS की भूमिका केवल 'भारतीय संस्कृति' के एक पाठ तक सीमित नहीं होनी चाहिए। B.Ed. और M.Ed. स्तर पर भारतीय शिक्षण-परंपराओं, ज्ञानमीमांसा, संवाद एवं वाद-विवाद, स्मृति और अभ्यास, मूल्य-शिक्षा, योग, स्थानीय ज्ञान और भारतीय मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। प्रशिक्षु शिक्षकों को यह भी सीखना चाहिए कि किसी पारंपरिक दावे की विश्वसनीयता कैसे जाँची जाए और उसे आयु-उपयुक्त शिक्षण सामग्री में कैसे बदला जाए।

Teacher education में 'IKS Pedagogical Lab' की अवधारणा उपयोगी हो सकती है, जहाँ प्रशिक्षु शिक्षक प्राथमिक स्रोत का सरल रूपांतरण, स्थानीय विशेषज्ञ का साक्षात्कार, समुदाय-आधारित परियोजना, बहुभाषिक सामग्री, lesson design और evidence-checking का अभ्यास करें। इससे IKS भावनात्मक गौरव के बजाय पेशेवर शिक्षण-दक्षता का भाग बनेगा।

15. भारतीय भाषाएँ और ज्ञान तक पहुँच

भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्स्थापन का भाषायी आयाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनुवाद आवश्यक है, किंतु केवल अनुवाद पर निर्भर रहने से अवधारणाओं के सूक्ष्म अर्थ खो सकते हैं। इसलिए संस्कृत, पाली, प्राकृत, तमिल और अन्य भारतीय भाषाओं के मूल स्रोतों को पढ़ने की क्षमता विकसित करने के साथ उच्च गुणवत्ता के आलोचनात्मक अनुवाद भी चाहिए। IKS पाठ्यपुस्तक योजना का प्राथमिक पाठ पढ़ सकने वाले विशेषज्ञ की अनिवार्यता इसी समस्या का संस्थागत समाधान प्रस्तुत करती है।

डिजिटल humanities, searchable corpora, manuscript catalogues और बहुभाषिक glossaries इस क्षेत्र में नई संभावनाएँ खोल सकते हैं। मशीन अनुवाद उपयोगी सहायक हो सकता है, पर शास्त्रीय या तकनीकी शब्दावली में मानव विशेषज्ञता और philological verification आवश्यक रहेंगे।

16. पर्यावरण और सतत विकास

भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति और मानव जीवन के संबंध पर विविध दृष्टियाँ मिलती हैं। स्थानीय जल-संचयन, जैवविविधता, बीज-संरक्षण, पारंपरिक कृषि और ऋतु-आधारित जीवन-पद्धतियों का अध्ययन sustainability education को स्थानीय संदर्भ दे सकता है। किंतु किसी परंपरागत अभ्यास को 'सतत' घोषित करने से पहले उसके ऐतिहासिक पर्यावरण, संसाधन-उपयोग और वर्तमान परिस्थितियों का परीक्षण आवश्यक है।

IKS आधारित पर्यावरण शिक्षा का श्रेष्ठ रूप स्थानीय ज्ञान और आधुनिक पर्यावरण विज्ञान के बीच संवाद होगा। विद्यार्थी पारंपरिक जल-संरचना का मानचित्रण कर सकते हैं, उसके डिजाइन और वर्तमान उपयोग का अध्ययन कर सकते हैं और आधुनिक hydrology के संदर्भ में उसकी उपयोगिता का विश्लेषण कर सकते हैं। इस प्रकार परंपरा शोध-प्रश्न का स्रोत बनती है, प्रमाण का विकल्प नहीं।

17. स्वास्थ्य, योग और मनोविज्ञान

योग और आयुर्वेद भारतीय ज्ञान परंपरा के सबसे व्यापक रूप से पहचाने जाने वाले क्षेत्रों में हैं, किंतु शैक्षिक संदर्भ में इनके अध्ययन को ऐतिहासिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक स्तरों में स्पष्ट रूप से विभेदित करना चाहिए। किसी शास्त्रीय अवधारणा का ऐतिहासिक महत्त्व और किसी चिकित्सीय दावे की आधुनिक प्रभावशीलता दो अलग प्रश्न हैं। स्वास्थ्य-संबंधी दावों के लिए उपयुक्त नैदानिक या वैज्ञानिक प्रमाण आवश्यक हैं।

भारतीय मनोविज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य पर भी संस्थागत रुचि बढ़ी है; वर्तमान IKS परियोजना सूची में IIT Mandi का mental health applications centre तथा भारतीय मनोविज्ञान से संबंधित केंद्र दिखाई देते हैं। शिक्षा और मनोविज्ञान में इन परंपराओं का अध्ययन आत्म, ध्यान, भावनात्मक नियमन, कल्याण और नैतिक विकास जैसे विषयों पर नए शोध-प्रश्न उत्पन्न कर सकता है, पर आधुनिक मनोवैज्ञानिक मापन और अनुसंधान-पद्धति के साथ उनका सावधानीपूर्वक परीक्षण आवश्यक है।

18. प्रमुख चुनौतियाँ

पहली चुनौती प्रामाणिकता की है। इंटरनेट और लोकप्रिय साहित्य में IKS के नाम पर अनेक अप्रमाणित दावे प्रसारित होते हैं। विश्वविद्यालयों को primary-source verification, संदर्भ और peer review के स्पष्ट मानक विकसित करने होंगे। दूसरी चुनौती presentism है—आधुनिक वैज्ञानिक शब्दावली को प्राचीन ग्रंथों पर यांत्रिक रूप से आरोपित करने से ऐतिहासिक अर्थ विकृत हो सकता है। तीसरी चुनौती भाषायी विशेषज्ञता की कमी है; मूल स्रोत पढ़ने वाले विद्वानों और आधुनिक विषय-विशेषज्ञों के बीच सहयोग आवश्यक है।

चौथी चुनौती पाठ्यचर्या-अतिभार है। IKS को प्रत्येक विषय में प्रतीकात्मक रूप से जोड़ देना गुणवत्तापूर्ण समावेशन नहीं होगा। केवल वहीं समावेश होना चाहिए जहाँ स्पष्ट विषयगत संबंध और learning outcome हो। पाँचवीं चुनौती शिक्षक-तैयारी और गुणवत्तापूर्ण सामग्री की है। छठी चुनौती ज्ञान की विविधता है—'भारतीय ज्ञान' को एक समान, स्थिर या केवल संस्कृत-आधारित परंपरा मानना भारत की क्षेत्रीय, लोक, जनजातीय, बौद्ध, जैन और अन्य ज्ञान-धाराओं की बहुलता को कम कर सकता है।

सातवीं चुनौती मूल्यांकन की है। किसी कार्यक्रम की सफलता केवल आयोजित कार्यशालाओं, पाठ्यक्रमों या केंद्रों की संख्या से नहीं आँकी जानी चाहिए। यह देखना होगा कि विद्यार्थियों की अवधारणात्मक समझ, स्रोत-पठन, अनुसंधान कौशल, नवाचार और सामाजिक उपयोगिता में क्या परिवर्तन आया।

19. प्रामाणिक IKS शिक्षा के लिए गुणवत्ता-जाँच ढाँचा

मानदंड	मुख्य प्रश्न	अपेक्षित प्रमाण
स्रोत	दावा कहाँ से आया?	मूल पाठ/पांडुलिपि/विश्वसनीय संस्करण
संदर्भ	दावा किस ऐतिहासिक संदर्भ का है?	तिथि, परंपरा, भाष्य, सामाजिक संदर्भ
भाषा	क्या तकनीकी शब्द का अर्थ सही है?	भाषायी विशेषज्ञ/आलोचनात्मक अनुवाद
वैज्ञानिक दावा	क्या परीक्षण योग्य दावा है?	उपयुक्त आधुनिक शोध/प्रयोग
शिक्षणीयता	विद्यार्थी क्या सीखेगा?	स्पष्ट learning outcomes और गतिविधि
समकालीन उपयोग	आज इसकी उपयोगिता क्या है?	पायलट, क्षेत्र अध्ययन, तुलनात्मक मूल्यांकन

तालिका 1. IKS आधारित शैक्षिक सामग्री के लिए प्रस्तावित गुणवत्ता-जाँच ढाँचा।

20. भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य में IKS के लिए सबसे बड़ी संभावना डिजिटल और अंतर्विषयक ज्ञान-अवसंरचना के निर्माण में है। सत्यापित डिजिटल ग्रंथ, बहुभाषिक शब्दकोश, annotated translations, open educational resources, पारंपरिक तकनीकों के डेटाबेस और क्षेत्रीय ज्ञान के ethical documentation से शोध की गुणवत्ता बढ़ सकती है। साथ ही traditional knowledge holders को केवल 'सूचना-स्रोत' नहीं, बल्कि शोध-सहभागी के रूप में मान्यता देना आवश्यक होगा।

दूसरी संभावना school-to-research continuum विकसित करने की है। विद्यालय में स्थानीय परियोजना, स्नातक स्तर पर परिचयात्मक/विषय-विशिष्ट पाठ्यक्रम, स्नातकोत्तर स्तर पर स्रोत एवं पद्धति प्रशिक्षण और शोध स्तर पर गहन अंतर्विषयक अध्ययन—यह क्रम IKS को सतही पाठ्यांश बनने से बचा सकता है। तीसरी संभावना वैश्विक अकादमिक संवाद की है। भारतीय गणित, तर्क, भाषा-विज्ञान, चिकित्सा इतिहास, दर्शन और पर्यावरणीय ज्ञान पर उच्च गुणवत्ता का शोध विश्व ज्ञान-इतिहास में भारत के योगदान को अधिक प्रमाणिक रूप से स्थापित कर सकता है।

चौथी संभावना innovation की है। पारंपरिक ज्ञान से प्रेरित आधुनिक उत्पाद या समाधान तभी सार्थक होंगे जब वे intellectual property, community rights, benefit sharing, sustainability और वैज्ञानिक validation के मानकों का पालन करें। इस प्रकार IKS heritage और innovation के बीच पुल बन सकता है।

21. सुझाव

स्रोत-आधारित पाठ्यचर्या — प्रत्येक IKS इकाई में प्राथमिक/विश्वसनीय स्रोत, ऐतिहासिक संदर्भ और स्पष्ट learning outcome दिया जाए।

भारतीय भाषा क्षमता — विश्वविद्यालयों में स्रोत-भाषा, technical terminology और उच्च गुणवत्ता अनुवाद के प्रशिक्षण को बढ़ाया जाए।

अंतर्विषयक टीम — शास्त्र-विशेषज्ञ, इतिहासकार, वैज्ञानिक, शिक्षक-शिक्षाविद और समुदाय-विशेषज्ञ मिलकर पाठ्यक्रम एवं शोध विकसित करें।

Evidence Lab — IKS के परीक्षण योग्य दावों के लिए प्रयोग, field validation और replication की व्यवस्था की जाए।

Teacher Capacity Building — B.Ed./M.Ed. तथा faculty development में IKS pedagogy, source criticism और misinformation पहचान शामिल हो।

स्थानीय ज्ञान का दस्तावेजीकरण — लोक और जनजातीय ज्ञान का समुदाय की सहमति, श्रेय और अधिकारों के साथ दस्तावेजीकरण हो।

डिजिटल भंडार — peer-reviewed, multilingual और searchable IKS repositories विकसित किए जाएँ।

परिणाम-आधारित मूल्यांकन — केंद्रों और योजनाओं का मूल्यांकन केवल गतिविधि-संख्या से नहीं, शोध गुणवत्ता, सामग्री, विद्यार्थी सीखने और सामाजिक उपयोग से हो।

22. चर्चा

वर्तमान परिदृश्य बताता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्स्थापन नीतिगत विचार से आगे बढ़कर संस्थागत गतिविधि का रूप ले चुका है। IKS Division की स्थापना, विभिन्न संस्थानों में केंद्र, विविध विषयों के पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक योजना और शोध परियोजनाएँ इस परिवर्तन के ठोस संकेत हैं। विशेष रूप से पाठ्यपुस्तक योजना में प्राथमिक स्रोत-पठन और अंतर्विषयक सहयोग पर बल भविष्य की गुणवत्ता के लिए महत्वपूर्ण है। फिर भी 'पुनर्स्थापन' की सफलता संख्या की वृद्धि से नहीं, ज्ञान की विश्वसनीयता से तय होगी। यदि IKS को प्रमाणरहित गौरव-कथन के रूप में प्रस्तुत किया गया तो यह विद्यार्थियों की आलोचनात्मक क्षमता को कमजोर करेगा; यदि इसे केवल अतीत की वस्तु माना गया तो जीवंत ज्ञान-संवाद की संभावना खो जाएगी। अतः उचित दृष्टिकोण है—परंपरा के प्रति सम्मान, स्रोत के प्रति निष्ठा, दावे के प्रति आलोचनात्मकता और उपयोग के प्रति प्रयोगशीलता।

शिक्षा में IKS का सबसे गहरा योगदान संभवतः 'क्या पढ़ाएँ' से अधिक 'ज्ञान को कैसे देखें' में हो सकता है। विभिन्न ज्ञान-परंपराओं की तुलना, भाषा और अवधारणा का संबंध, अनुभव और तर्क का संवाद, प्रकृति और समाज के प्रति उत्तरदायित्व तथा ज्ञान के नैतिक उपयोग जैसे प्रश्न आधुनिक शिक्षा को समृद्ध कर सकते हैं। इस अर्थ में IKS का पुनर्स्थापन अतीत की ओर वापसी नहीं, बल्कि बहुविध ज्ञान-स्रोतों के आधार पर भविष्य की शिक्षा का पुनर्विचार है।

23. निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा में पुनर्स्थापन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बाद भारतीय शिक्षा के महत्वपूर्ण विमर्शों में से एक बन गया है। वर्तमान संस्थागत पहलों से स्पष्ट है कि यह क्षेत्र केवल सांस्कृतिक अध्ययन तक सीमित नहीं है; आयुर्वेद, गणित, खगोल, तर्क, वास्तु, कृषि, मानसिक स्वास्थ्य, खेल, दर्शन और ज्ञान-संप्रेषण सहित अनेक क्षेत्रों में पाठ्यक्रम और शोध विकसित हो रहे हैं। शिक्षा मंत्रालय का IKS Division शोध-केंद्रों, इंटर्नशिप, शिक्षक-प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, दस्तावेजीकरण और पाठ्य-सामग्री विकास के माध्यम से इस प्रक्रिया को संस्थागत समर्थन दे रहा है।

फिर भी दीर्घकालिक सफलता के लिए प्रामाणिकता, आलोचनात्मक विवेक और शैक्षिक गुणवत्ता सर्वोपरि हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक विज्ञान का प्रतिस्पर्धी या विकल्प बनाकर नहीं, बल्कि ऐतिहासिक ज्ञान, अनुभव, दार्शनिक चिंतन और समकालीन अनुसंधान के बीच संवाद के रूप में विकसित करना अधिक उत्पादक होगा। मूल स्रोतों का अध्ययन, भारतीय भाषाओं की क्षमता, अंतर्विषयक सहयोग, वैज्ञानिक परीक्षण, समुदाय-अधिकार और प्रशिक्षित शिक्षक इस प्रक्रिया के प्रमुख आधार हैं।

अतः IKS का वास्तविक पुनर्स्थापन तभी होगा जब विद्यार्थी केवल यह न जानें कि भारत में कौन-सा ज्ञान विकसित हुआ, बल्कि यह भी सीखें कि वह ज्ञान कैसे निर्मित हुआ, किस संदर्भ में उपयोग हुआ, उसके प्रमाण क्या हैं, उसकी सीमाएँ क्या हैं और आज उससे कौन-से नए प्रश्न तथा समाधान विकसित किए जा सकते हैं। ऐसी दृष्टि भारतीय शिक्षा को अपनी बौद्धिक विरासत से जोड़ते हुए भविष्य-उन्मुख, अनुसंधानपरक, बहुभाषिक और नवाचारी बना सकती है।

संदर्भ:

- भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।

- भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) प्रभाग, शिक्षा मंत्रालय। (2025)। IKS पाठ्यपुस्तक और पाठ्यक्रम सामग्री लेखन (भारतीय-ज्ञान-पाठ्यपुस्तक-योजना) 2025–26: पात्रता मानदंड/तैयारी और जमा करने के निर्देश।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) प्रभाग, शिक्षा मंत्रालय। (2025)। IKS केंद्रों द्वारा पेश किए जाने वाले पाठ्यक्रम। AICTE/IKS प्रभाग।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) प्रभाग, शिक्षा मंत्रालय। (2025)। चयनित IKS अनुसंधान केंद्र। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) प्रभाग, शिक्षा मंत्रालय। (2026)। IKS केंद्र (पूरे हो चुके)। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) प्रभाग, शिक्षा मंत्रालय। (2026)। IKS परियोजनाएं, संस्थान और केंद्र खोज पोर्टल। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2024)। NEP का कार्यान्वयन: शैक्षणिक अनुसंधान और अंतर्राष्ट्रीयकरण। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। (2023)। स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। नई दिल्ली: NCERT।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC)। (2023)। उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान को शामिल करने के लिए दिशानिर्देश। नई दिल्ली: UGC।

Cite the Article:

कुमार, पाण्डेय, डॉ अरविन्द . (2026). शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्स्थापन: वर्तमान संदर्भ और संभावनाएँ. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1) 232-240, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 04, Issue 01, September-2026.,**DOI:** - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.26

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.